भगत नामदेव - सबद १५

पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥

रागु धनासरी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९४

पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥
ता चे हंसा सगले जनां ॥
क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥१॥
पहिल पुरसाबिरा ॥
अथोन पुरसादमरा ॥
असगा अस उसगा ॥
हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥१॥ रहाउ ॥
नाचंती गोपी जंना ॥
नईआ ते बैरे कंना ॥
तरकु न चा ॥
भ्रमीआ चा ॥
केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥२॥
पिंधी उभकले संसारा ॥
भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा ॥
तू कुनु रे ॥
मै जी ॥
नामा ॥
हो जी ॥
आला ते निवारणा जम कारणा ॥३॥४॥

सार: भारतीय दर्शन के अनुसार, वास्तविकता की शुरुआत किसी भी भौतिक रूप के अस्तित्व में आने से पहले, एक अव्यक्त और आदिम अवस्था में होती है। यह अवस्था (अबीरा) के रूप में

(पुरुष) अर्थात् ब्रह्मांडीय चेतना के सार के उद्भव को दर्शाती है। पुरुष, जो शाश्वत और अपरिवर्तनशील है, मौन साक्षी की भाँति कार्य करता है जो स्वयं को उसमें लिप्त किए बिना, अस्तित्व को देखता है। इसी आधार से, सृष्टि के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जिससे चेतना और उसकी अभिव्यक्ति के बीच संबंध स्थापित होता है। इस परस्पर क्रिया से मन, इंद्रियाँ और भौतिक ब्रह्मांड जन्म लेते हैं। जब सृष्टि की प्रक्रिया चल रही होती है तब भी पुरुष अप्रभावित रहता है, यह प्रमाण है कि समस्त जीवन चेतना और पदार्थ के परस्पर संबंध से उत्पन्न होता है। जिस तरह सूर्य प्रकृति को प्रकाशित करता है, उसी तरह पुरुष भी स्वयं अपरिवर्तित रहते हुए, विभिन्न जीव-रूपों के विकास को संभव बनाता है।

पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥

सबसे पहले, जंगल में कमल खिले। यह खिलना इस बात का संकेत है कि अस्तित्व की जटिलता के भीतर स्पष्टता का उदय ही जागरूकता की प्रथम अवस्था है।

ता चे हंसा सगले जनां ॥

सभी प्राणी इसमें तैरने वाले हंस हैं। यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि जीवन के विविध रूप ही सार्वभौमिक चेतना का सार हैं।

क्रिस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥१॥

यहाँ तक कि देवता कृष्ण भी इस बात से अवगत थे कि प्रत्येक प्राणी प्रकृति के सर्वव्यापी नियमों के अनुसार ही नाचता है। यह दर्शाता है कि विविधता एक ही स्रोत है जो जागरूकता के विभिन्न क्षेत्रों में स्पंदित होती है। (१)

पहिल पुरसाबिरा ॥

सबसे पहले, आदिम सार प्रकट होता है। यह किसी भी भौतिक रूप धारण करने से पहले की उस अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें पुरुष के नाम से जाना जाने वाला ब्रह्मांडीय चेतना का सिद्धांत, आदिम शक्ति (अबिरा) के रूप में प्रकट होता है ।

अथोन पुरसादमरा ॥
उसके बाद, आदिम सार जीवन-रूप के रूप में प्रकट होता है। यह भौतिक रूप धारण करने की उस अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें पुरुष के नाम से जाना जाने वाला ब्रह्मांडीय चेतना का सिद्धांत, श्वास (दमरा) के साथ प्रकट होता है।

असगा अस उसगा ॥
हमारे अस्तित्व का प्रत्येक पहलू उस आदिम शक्ति का ही एक हिस्सा है। यह अद्वैत को दर्शाता है, वह समझ कि रचयिता और सृष्टि एक ही हैं, अस्तित्व के क्षेत्र से बाहर कुछ भी नहीं है।

हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥१॥ रहाउ ॥
अस्तित्व, एक बग़ीचे की तरह, उस सर्वव्यापी सार द्वारा ही निर्मित है जो एक रहट की तरह लयबद्ध रूप से प्रवाहित होता है, जैसे वह पहिया स्रोत से पानी खींचता है। यह चित्र जीवन को ऐसी कार्यप्रणाली के रूप में प्रस्तुत करता है जिसमें जागरूकता का उद्गम और स्रोत एकीकृत शक्ति से ही उत्पन्न होते हैं। (१)(विराम)

नाचंती गोपी जंना ॥
स्त्री और पुरुष के गुण लयबद्ध रूप से प्रवाहित होते हैं। यह गतिविधि उस सर्वव्यापी ऊर्जा के लिंग-रहित सार का प्रतीक है।

नईआ ते बैरे कंना ॥
उस सर्वव्यापी सार के नियमों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। यह तटस्थ दर्शक के रूप में जागरूकता को दर्शाता है जहाँ एक तरफ़ इंद्रियाँ प्रतिक्रिया करती हैं, वहीं यह स्थिर और अप्रभावित बना रहता है।

तरकु न चा ॥
तार्किक संवाद को महत्व नहीं दिया जाता। यह ऐसी मानसिकता को इंगित करता है जो न तो विश्लेषणात्मक सोच को प्राथमिकता देती है और न ही सार्थक संवाद को।

भ्रमीआ चा ॥
भ्रम में भटकने को महत्व दिया जाता है। यह ऐसे स्वभाव को दर्शाता है जो गहन ज्ञान प्राप्त करने के बजाय, व्यर्थ के संदेह में उलझे रहने में ही लिप्त रहता है।

केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥२॥
सर्वव्यापी चेतना के सार के माध्यम से, मुझे यह एहसास होता है कि मैं और अन्य, हम एक ही हैं। यह जागरण को दर्शाता है जहाँ ज्ञान का मार्गदर्शन बिखरे हुए मन को एक ही परम सत्य से फिर से जोड़ देता है। (२)

पिंधी उभकले संसारा ॥
रहट अर्थात फ़ारसी चाक, के घड़ों की तरह अनुभव सुखद और खाली, दोनों तरह के हो सकते हैं। मानव मन की यह विरोधाभासी प्रकृति उजागर करती है कि हमारी धारणाएँ हमारे अस्तित्व की गुणवत्ता को कैसे निर्धारित करती हैं।

भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा ॥
भ्रम के चक्रों में भटकते हुए, मैं तुम्हारे द्वार, अर्थात् आंतरिक चेतना के द्वार पर आ पहुँचा हूँ। यह संदेह और अज्ञान की थकान के बाद अपने वास्तविक स्वरूप की ओर लौटने का प्रतीक है।

तू कुनु रे ॥
तुम कौन हो? यह प्रश्न गहन आत्म-अन्वेषण को दर्शाता है, यह उस निर्णायक क्षण को प्रतिबिंबित करता है जब स्वयं का सामना अहं से होता है।

मै जी ॥

मैं एक जीव हूँ। यह अपने स्वयं की विनम्र स्वीकृति के माध्यम से, अपने अस्तित्व के प्रति जागृति को इंगित करता है।

नामा ॥

नामदेव। नाम या भौतिक रूप के साथ यह पहचान, उन विशिष्ट भूमिकाओं की ओर संकेत करती है जो हम अपने जीवन की यात्रा के दौरान निभाते हैं।

हो जी ॥

मैं एक जीव के रूप में प्रकट हुआ हूँ। यह हमारे सीमित भौतिक अस्तित्व और असीम चेतना, दोनों की स्वीकृति को दर्शाता है।

आला ते निवारणा जम कारणा ॥३॥४॥

अस्तित्व में आने का उद्देश्य हमें उस विनाशकारी नकारात्मकता से मुक्त करना होना चाहिए जिसके कारण हमारा यह अस्तित्व पैदा हुआ है। इस प्रार्थना के माध्यम से उस अज्ञान को दूर करने की याचना की गई है जो आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक जन्म-मृत्यु के चक्र को निरंतर बनाये रखता है। (३)(४)

तत्त्व: भक्त नामदेव आंतरिक खोज के महत्व पर ज़ोर देते हैं। 'तुम कौन हो?' यह सवाल आत्म-परीक्षण को बढ़ावा देता है और हमें अहंकार तथा सतही पहचानों के प्रति अपने लगाव पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करता है। यह खोज सच्चे स्वरूप की अवधारणा के अनुरूप है, जो अस्थायी पहचानों से परे है। यह पहचानना कि मैं एक अस्तित्व हूँ, जीवन के प्रति जागरण का संकेत है लेकिन यह समझना कि यह भौतिक शरीर नश्वर है, अस्तित्व के बारे में स्पष्टता लाता है। नकारात्मकता और अज्ञान से ऊपर उठने की इच्छा, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक मृत्यु के चक्रों से मुक्ति पाने की हमारी खोज से जुड़ी है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com